कैसे जानना एवं उसे जानना (Knowing how and knowing that) :-

राइल 'द कॉनसैप्ट ऑफ माइण्ड' के द्वितीय अध्याय के आमुख में लिखते हैं कि इसमें उन्होंने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि जब व्यक्तियों को एक मनस् के गुणों का अभ्यास करते हुए वर्णन किया जाता है तो वह किसी रहस्यात्मक गुप्त प्रकरण की ओर संकेत नहीं करते अपितु इससे प्रत्यक्ष क्रियाओं एवं कथनों की ओर संकेत किया जाता है। यह निश्चित रूप से उन क्रियाओं को जो लापरवाही से सम्पादित की गई हैं एवं उन क्रियाओं को जो सोद्देश्य की गईं, का ध्यान पूर्वक या चातुर्यपूर्वक की गई क्रियाओं के वर्णन के बीच का भेद है एवं यह खोज के लिए एक सूक्ष्म पक्ष है।

राइल कहते हैं कि 'बुद्धि एवं प्रतिभा' के अन्तर्गत ऐसे मानसिक व्यवहार एवं अवधारणाएँ जिनका परीक्षण करना है, अवधारणाओं के परिवार के सदस्य के रूप में स्वीकार किया जा सकता है एवं इन्हें साधारणतः बुद्धि कहा जाता है। इस परिवार के कुछ विशेषण इस प्रकार हैं, जैसे चालाक, संवेदनशील, सजग, विधिवत, खोजी, बुद्धिमान, कुशाग्रबुद्धि, तार्किक, विनोदपूर्ण, निरीक्षक, आलोचक, प्रयोगात्मक, प्रत्युत्पन्नमति, धूर्त, विद्वान, न्यायपूर्ण एवं धर्म भीरू। जब किसी व्यक्ति में बुद्धि की कमी को देखते हैं तो उसे मन्द बुद्धि कहकर वर्णित किया जाता है या उसे लापरवाह, भोंदू, बेवकूफ, अतार्किक, विनोदरहित, सरल, अविद्वान एवं न्यायरहित इत्यादि कहा जाता है। सबसे पहले यह देखना अनिवार्य होता है कि बुद्धिहीनता अज्ञानता के बराबर नहीं है। एक व्यक्ति जो युक्ति या रोचक प्रसंग के लिए उपयुक्त है हो सकता है कि वह तथ्य के संबंध में अनुपयुक्त हो। दार्शनिक एवं साधारण व्यक्ति दोनों ही बुद्धिमान होना एवं प्रतिभावान होना इस विभेद को ध्यानपूर्वक नहीं देखते हैं एवं इसे एक मानसिक व्यवहार के रूप में बौद्धिक प्रक्रिया स्वीकार करते हैं। वे इसके अतिरिक्त एक मानसिक व्यवहार को मानते हैं जिसे ज्ञान कहते हैं। वे सोचते हैं कि मनस् का प्राथमिक अभ्यास प्रश्नों के उत्तर खोजना है एवं दूसरा कार्य आवेदन करना है। राइल कहते हैं कि जब हम प्रतिभा या बौद्धिक शक्ति एवं व्यक्ति के कार्य सम्पादन के संबंध में कथन करते हैं तो प्रायः प्राथमिक रूप से उस वर्ग की ओर निर्देशित किया जाता है जिसका कार्य सिद्धान्तीकरण करना होता है। इस क्रिया का उद्देश्य सत्य प्रतिज्ञप्तियों या तथ्यों को जानना है। मानव बुद्धि के प्रारूप के रूप में गणित एवं स्थापित प्राकृतिक विज्ञान को माना जाता है। दूसरे मानवीय शक्ति का वर्ग केवल तब मानसिक माना जा सकता है जब उन्हें किसी भी प्रकार से बौद्धिक नियंत्रण के द्वारा सत्य प्रतिज्ञप्तियों

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

को ग्रहण करते हुए दर्शाया जाता है। बौद्धिक का तात्पर्य यह लिया जाता है कि जो सत्य एवं उनके बीच संबंधों को आत्मसात कर सके। अतः बौद्धिक रूप से कार्य करने का तात्पर्य है अ-सैद्धान्तिक प्रवृत्ति को जीवन के सत्य व्यवहार से नियंत्रित करना। इस अध्याय के अन्तर्गत राइल ने मुख्य रूप से यह दिखाने का प्रयास किया है कि ऐसी अनेक प्रक्रियाएँ हैं जो मनस के गुणों को दर्शाती हैं, जबकि वे न तो अपने आप में बौद्धिक क्रिया है और न ही इन्हें प्रभावित करती हैं। बौद्धिक अभ्यास सिद्धान्त का सौतेला सन्तान नहीं है।

राइल एक दूसरे पहलू की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहते हैं कि सैद्धान्तीकरण एक प्रक्रिया है जिसे अधिकाधिक लोग कर सकते हैं एवं सामान्यतः इस व्यवहार को मौन रहकर भी करते हैं। वे इसे स्वयं के लिए कहते हैं। वे अपने विचारों को सदैव कागज में न बनाकर इसे आकृतिक एवं चित्र में प्रतिपादित करते हैं। वे इन्हें 'अपने मनस में देखते हैं। इस प्रकार मौनपूर्वक स्वयं से बात करने का तरीका न तो तुरन्त प्राप्त किया जा सकता है और न ही इसे बिना प्रयास के प्राप्त किया जा सकता है। अपने विचारों को अपने तक रखना एक अहंमात्र सन्तुष्टि है। प्लेटो ने कहा है कि विचार में आत्मा स्वयं से वार्तालाप करता है। राइल कहते हैं कि सैद्धान्तीकरण मनस की प्राथमिक प्रक्रिया है एवं सैद्धान्तीकरण आन्तरिक रूप से निजी अथवा मौन या आन्तरिक प्रक्रिया है। ये दोनों ही मान्यताएँ यंत्र के अन्दर प्रेत की मान्यता को आधार प्रदान करते हैं। व्यक्ति अपने मनस को उस 'स्थान' से तादात्म्य करता है जहाँ वे अपने गोपनीय विचार को संचालित करते हैं।

राइल कहते हैं कि 'कैसे जानना एवं उसे जानना' के अन्तर्गत जब किसी व्यक्ति का वर्णन बौद्धिक विशेषता जैसे चतुर या बेवकूफ, विवेकपूर्ण या अविवेकी के द्वारा किया जाता है तो यह वर्णन उनमें ज्ञान या अज्ञान को नहीं थोपता अपितु योग्यता या अयोग्यता, जो किसी निश्चित प्रकार के कार्य को करने में परिलक्षित होता है, उसके संबंध में कहता है। सिद्धान्त प्रतिपादक पूर्वधिकृत रहता है एवं कार्य में प्रवृत्ति, स्त्रोत एवं प्रत्ययपत्र महत्वपूर्ण सिद्धान्तों की अवहेलना करता है। "कैसे जानता एवं उसे जानना" इसके बीच एक निश्चित समानान्तरता एवं अपसारिता (Divergence) है। 'प्रो.ज.प्र. शुक्ल अपनी पुस्तक 'द नेचर ऑफ माइण्ड' में राइल की 'मनस' संबंधी अवधारणा का मूल्यांकन करते हुए लिखते हैं "प्रो. राइल का ध्येय मानसिक व्यवहार की अवधारणा का इस प्रकार विश्लेषण करना है जिससे यह प्रमाणित हो जाए कि वे गलत ढँग से प्रयुक्त किये गये हैं।' प्रो. शुक्ल राइल द्वारा प्रतिपादित मनस की अवधारणा से सन्तुष्ट नहीं है। उनकी समालोचना करते हुए उन्होंने एक बहुत महत्वपूर्ण पक्ष की ओर ध्यान आकषित करते हुए कहा है कि राइल मनस को केवल स्ववृत्ति, योग्यता, दायित्व, प्रवृत्ति के रूप में स्वीकार करते हैं। माना की मनस स्ववृत्ति या योग्यता ही है, परन्तु प्रश्न

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

यह उपस्थित होता है कि किस प्रकार ये सभी योग्यताएँ, प्रवृत्तियाँ एक सार्थक अनुभव के रूप में समायोजित एवं संगठित होते हैं? यह समायोजन केवल इन्द्रिय अनुभव या विशेष प्रकार का मानसिक व्यवहार नहीं है। मानव का मनस् एक उच्चस्तरीय अनुभव की अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है जो मात्र योग्यता या स्ववृत्ति नहीं है। चेतना को केवल अनुभव में नहीं बदला जा सकता है। वे आगे लिखते हैं कि या तो राइल को यह स्वीकार करना पड़ेगा कि स्ववृत्ति इत्यादि मूलभूत रूप से चेतना है या चेतना द्वारा कुछ उच्च अनुभव के सिद्धान्त इन्हें प्रदत्त हैं। चेतना के महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रो. शुक्ल लिखते हैं कि वास्तविकता यह है कि चेतना मानव अनुभव का आधार भूत सत्य है एवं मानव के समग्र व्यक्तित्व का विकास इसी चेतना पर आधारित है। बड़े ही स्पष्ट शब्दों में राइल की आलोचना करते हुए प्रो. शुक्ल कहते हैं 'राइल मनस के विश्लेषण में .स्ववृत्ति पर आकर रूक गये, इसके आगे नहीं बढ़ पाये। वे द्वैतवादी दर्शन के विरुद्ध अत्यधिक पूर्वाग्रह से पूर्ण रहे एवं व्यवहारवाद से प्रभावित रहे। कदाचित यही कारण है कि अति उत्साह के कारण वे कई आनुभविक सत्यों को भूल गये एवं जल्दी बाजी में सामान्यीकरण कर दिया। एक ओर महत्वपूर्ण पक्ष को उजागर करते हुए प्रो. ज.प्र. शुक्ल ने लिखा है कि राइल ने स्वप्न के संबंध में कुछ नहीं कहा जो न केवल मानव मस्तिष्क की एक प्रक्रिया है अपितु मनोविश्लेषण का केन्द्र बिन्दु है। अन्त में निष्कर्ष के रूप में प्रो. शुक्ल कहते हैं, प्रो. राइल की मनस की अवधारणा बहुत अधिक सशक्त नहीं है। इसका कारण यह है कि यह कुछ पूर्वाग्रह से संचालित है एवं ऐसा कोई भी मनस संबंधी सिद्धान्त सन्तोषप्रद नहीं हो सकता है जब तक वह मानसिक जीवन के क्षेत्र के साथ पूर्ण न्याय न करें। राइल की मनस की अवधारणा महत्वपूर्ण इसलिए है कि इसमें कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गई जिससे विचार में स्पष्टता आई है, परन्तु अपने मण्डनात्मक पक्ष में यह कोई सन्तोषप्रद सिद्धान्त मनस के संबंध में प्रस्तुत करने में असमर्थ रहे।[1]

Scanned by TapScanner